दिलो में नरमी पैदा करने वाली बाते

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ हिन्दी.

नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*इबने माजा, रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- बेशक अल्लाह तआला फरमाते है कि ऐ आदम के बेटे! मेरी इबादत के लिए वकत निकाला करो में तुम्हारे दिल को दौलत से भर दूंगा और तुम्हारी गुरबत को खतम कर दूंगा, और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो में तुमको मसरूफियत में रखूंगा और तुम्हारी जरूरतो को भी पूरा नहीं करूंगा.

*तिर्मेज़ी, इबने माजा, रावी हज़रत सहल बिन सअद रदी:> रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया अगर अल्लाह तआला के नजदीक दुन्या की कदर और कीमत मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वोह किसी काफिर को दुन्या के पानी से एक घूट भी ना पिलाता.

*तिर्मेज़ी, रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो आदमी माल और दौलत का गुलाम है और उस्की

मोहब्बत में इस तरह गिफ्तार हो जाए कि उस्की वजह से अल्लाह की इबादत को भी भुला दे तो ऐसा आदमी काबिले लानत है.

*तिर्मेज़ी, रावी हज़रत कब बिन मालिक रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया दो भूखे भेडिये जिन्को बकरियो के रेवड में छोड दिया जाए वे इतना नुकसान नहीं पोहचाते, जितना इन्सान दौलत के लालच में दीन को नुकसान पोहचाते है.

*तिर्मेज़ी, इबने माजा, रावी हज़रत खब्बाब रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया ईमान वाला आदमी जिस कदर माल खर्च करता है उस्को उस्के बदले सवाब हासिल होगा अलबत्ता जिस माल को उसने बिना जरूरत खर्च किया उस्मे सवाब नहीं.

*तिर्मेज़ी, इबने माजा, रावी हज़रत सहल बिन सअद रदी:> एक आदमी ने अरज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा अमल बताए कि जिस्के करने से अल्लाह तआला और लोग भी मुझसे मोहब्बत करे. आपﷺ ने फरमाया दुन्या से मोहब्बत ना करो अल्लाह तआला तुम्से मोहब्बत करेंगे और लोगो के पास जो माल है उस्से भी मोहब्बत ना करो लोग तुम्से मोहब्बत करेंगे.

*तिर्मेज़ी, इबने माजा, रावी हज़रत इबने मसउद रदी:> रसूलुल्लाहﷺ चटाई पर सो रहे थे, जब आप जागे तो जिस्म मुबारक पर चटाई के निशानात थे. मेने अरज़ किया अगर आप हमे

हुक्म फरमाते तो हम आपके लिए नर्म बिछौना बिछा देते और खूबसूरत चादर तैयार करवाते. आपصلى الله عليه وسلم ने फरमाया मुझे ना तो दुन्या के साथ मोहब्बत है और ना ही दुन्या को मेरे साथ मोहब्बत है, मेरा ताल्लुक दुन्या के साथ सिर्फ इतना है जितना कि एक आदमी किसी पेड के साए में आराम करता है फिर वो पेड को छोडकर चला जाता है.

*तिर्मेज़ी, इबने माजा, रावी हज़रत मिकदाम बिन मजदी करब रदी:> रसूलुल्लाहصلى الله عليه وسلم ने फरमाया पेट से ज़ियादा बुरा कोई बर्तन नहीं जिस्को इन्सान भरता है जबकि आदम के बेटे के लिए चन्द लुक्मे ही काफी है जो उस्की कमर को सीधा रखे, अगर खाने के सिवा कोई चारा ना हो तो पेट का एक हिस्सा खाने के लिए, दूसरा हिस्सा पानी के लिए और तीसरा हिस्सा सांस लेने के लिए रखो.

फकिरी की फज़ीलत और रसूलुल्लाहصلى الله عليه وسلم की ज़िन्दगी

*तिर्मेज़ी, रावी हज़रत अनस रदी:> रसूलुल्लाहصلى الله عليه وسلم यह दुआ फरमाते थे तरज़ुमा ऐ अल्लाह मुझे मिस्कीन (गरीब) जिन्दा रखिए, मुझे मिस्कीनी की हालत में मौत दीजिए और मुझे मिस्कीनों की जमात में उठाईए. हजरत आइशा (रदी) ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! किस लिए? आपصلى الله عليه وسلم ने फरमाया- इसलिए की वे लोग मालदारों से ४० साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे. ऐ आइशा! तुम मिस्कीन

को खाली हाथ न लौटावो अगरचे खजूर का कोई हिस्सा ही देकर रवाना करो. ऐ आइशा! तुम मिस्कीनों से मुहब्बत करो और उन्हें अपने करीब करो, बिला-शुब्हा कयामत के दिन अल्लाह तआला तुम्हें अपने करीब करेगा.

मतलब फकीर और गरीब लोगों को झिडकना सख्त मना है बल्की उनसे मुहब्बत करनी चाहिये. अधिक मालूमात के लिए पढिये तर्जुमा और तफसीर सूरे अज्जुहा/९८, आयत/१०.

*तिर्मेज़ी, रावी हज़रत अनस रदी:> रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया मुझे अल्लाह तआला की राह में इतना डराया गया है की किसी और आदमी को इतना नहीं डराया गया होगा, और बिला-शुब्हा मुझे अल्लाह तआला की राह में इस कदर तकलीफ पहूंची है की इस कदर तकलीफ किसी को नहीं पहूंची होगी, बिला-शुब्हा मुझ पर तीस दिन और रातें ऐसी गुजरी है की मेरे और बिलाल के पास इतना खाना भी न होता की जो किसी आदमी की खुराक बन सके अलबत्ता इस कदर जो बिलाल की बगल में आ सके.

मतलब दीने इस्लाम की तब्लीग की खातिर आपﷺ को बेशुमार तकलीफों का सामना करना पडा यहां तक की खाने-पीने के लिए भी कुछ नहीं होता था.